भू मि का

प्रेमचन्दोत्तर हिन्दी उपन्यास विधा के क्षेत्र में भगवतीचरण वर्मा जी का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। वर्मा जी ने उपन्यास साहित्य के क्षेत्र में लगभग चौदह उपन्यासों की सृजना करके यथार्थवाद का चित्रण किया है। भगवतीचरण वर्माजी `चित्रलेखा` उपन्यास से ही ख्यातनाम हो चुके थे।

पहले से ही भारतीय संस्कृति के प्रति रुचि होने के कारण मैंने भगवतीचरण वर्मा का `चित्रलेखा` उपन्यास चुना। एम.ए.में मैंने आपके `भूले-बिसरे चित्र` का अध्ययन किया था। विषय का अनोखापन,कथानक की विविधता और काव्यमय भाषाशैली के कारण वर्मा जी के उपन्यास पढती रही। मेरी रुचि के अनुसार मुझे एम.फिल.की परीक्षा के लिए विशेष साहित्य विधा के रूप में `उपन्यास` विधा रखने की अनुमति मिली। उस समय भगवतीचरण वर्मा के चौदह उपन्यासों को लेकर प्रबन्ध प्रस्तुत करना अनावश्यक महसूस हुआ, तब मैंने भगवतीचरण वर्मा के `चित्रलेखा` उपन्यास को लेकर प्रबन्ध प्रस्तुत करने का निर्णय लिया।

भगवतीचरण वर्मा जी ने `चित्रलेखा` के द्वारा भारतीय सांस्कृतिकता, दार्शनिकता,सामाजिक समस्याओं को प्रस्तुत किया है। किसी भी उपन्यास का अध्ययन उपन्यास-तत्वों के अनुसार होता है। उपन्यास के तत्व इस प्रकार होता है -- कथावस्तु,कथोपकथन ,पात्र एवं चरित्र-चित्रण,देशकाल,वातावरण,भाषाशैली और उद्देश्य। फिर भी मैंने `चित्रलेखा` का अनुशीलन करते समय सांस्कृतिकता, दार्शनिकता,चित्रलेखा के पात्र एवं सामाजिक समस्याएँ इन सीमाओं के आधारपर किया है। `चित्रलेखा` के अध्ययन करते समय मेरे मन में कुछ प्रश्न थे --

१) भगवतीचरण वर्मा के समस्त उपन्यासों में कौनसा स्वर मुखरित हुआ है ?

२) भगवतीचरण वर्मा जी ने `चित्रलेखा` के द्वारा कौनसे सांस्कृतिक मूल्यों का प्रस्तुतिकरण किया है ?

३) `चित्रलेखा` उपन्यास में महत्वपूर्ण पात्र किसका है ?

४) `चित्रलेखा` के द्वारा वर्माजी ने कौनसी सामाजिक समस्याओं को सामने रखा है ?

उपर्युक्त प्रश्नों के ज्यों उत्तर अपने विषय का अनुशिलन करने पर मिले हैं उनको उपसंहार में दिया है । अध्ययन सुविधा के लिए मैंने अपने लघु शोध-प्रबन्ध को निम्नलिखित अध्यायों में विभाजित किया है ।

१) प्रथम अध्याय --

भगवतीचरण वर्मा का व्यक्तित्व एवं कृतित्व --

साहित्यकार तथा उसकी कृतियों में परस्पर संबंध बना रहता है । साहित्यकार के व्यक्तित्व का प्रभाव उसके साहित्य पर पडता है । अत: वर्माजी के व्यक्तित्व एवं उनके व्यक्तित्व-गठन में उनके परिवार का योगदान उनका जन्म,बचपन,शिक्षा एवं कृतित्व को इस अध्याय में देखा गया है । साथ ही आपके साहित्य सृजना का पाठकों से परिचय हो,इस दृष्टि से मैंने आपके - साहित्य विधाओं का संक्षेप में परिचय दिया है ।

२) द्वितीय अध्याय --

भगवतीचरण वर्मा के उपन्यासों का सामान्य परिचय --

द्वितीय अध्याय में वर्माजी के उपन्यासों की कथावस्तु संक्षेप में दी गयी है । आपके उपन्यासों का उद्देश्य तथा निष्कर्ष दिया गया है ।

३) तृतीय अध्याय --

` चित्रलेखा` में अभिव्यक्त सांस्कृतिकता --

तृतीय अध्याय में ` चित्रलेखा` उपन्यास की सांस्कृतिकता की अभिव्यक्ति दी है । संस्कृति शब्द की उत्पत्ति से लेकर सांस्कृतिक मूल्यों को स्पष्ट किया है और निष्कर्ष दिया गया है ।

४) चतुर्थ अध्याय --

` चित्रलेखा` में अभिव्यक्त दार्शनिकता --

चतुर्थ अध्याय में ` चित्रलेखा ` के आधार पर वर्माजी के दार्शनिक विचार

प्रस्तुत किये हैं । जीवन सम्बन्धि दृष्टिकोण , पाप-पुण्य ,भोगवादी दर्शन, प्रवृधि मार्ग और निवृधि मार्ग का विस्तार के साथ विश्लेषण किया है ।

५) पंचम अध्याय --

` चित्रलेखा` उपन्यास के पात्र --

पंचम अध्याय में वर्माजी के` चित्रलेखा` उपन्यास के पात्रों का चरित्र के साथ परिचय दिया गया है । उपन्यास में नर्तकी` चित्रलेखा` का स्थान बताया है ।

६) षष्ठम् अध्याय --

` चित्रलेखा में चित्रित सामाजिक समस्याएँ --

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध के षष्ठम् अध्याय में वर्माजी के ` चित्रलेखा` द्वारा उद्घाटित सामाजिक समस्याओं का चित्रण किया है । नारी और विवाह, विधवा समस्या,वेश्या समस्या,अवैध प्रेम की समस्या, घर - बाहर की समस्या और पाप - पुण्य की समस्याओं का विवेचन किया है ।

७) सप्तम अध्याय --

` उ प सं हा र `

` उपसंहार` इस सप्तम अध्याय में वर्माजी के उपर्युक्त अध्यायों के अध्ययन में निकले निष्कर्षों का विस्तृत विवरण दिया है ।

अंत में सहाय्यक संदर्भ ग्रंथ सूची दि गई है ।

ऋण-निर्देश

इस कार्य को संपन्न बनाने में मुझे जिन विद्वानों का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ उनके प्रति आभार प्रकट करना मैं अपना दायित्व समझती हूँ। ` चित्रलेखा ` का अनुशीलन करते समय सांस्कृतिकता, दार्शनिकता जैसे गहन विषयों पर अध्ययन करना कठीण बात थी। अत: यह लघु शोध-प्रबंध पूर्ण करने में मेरे गुरूवर्य प्रा.डॉ.वसंत केशव मोरेजी, मानद अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर ने अनमोल सहयोग दिया है। यह लघु शोध-प्रबन्ध आप ही के आत्मीय एवं प्रेरक निरीक्षण और निर्देशन का प्रतिफल है। आपका मिला हुआ आत्मीय और मौलीक मार्गदर्शन अविस्मरणीय है। अत: उनके प्रति मैं बहुत ऋणी हूँ। आपके प्रति कृतज्ञता प्रकट करना मेरा परम कर्तव्य है। आप के इस अनुग्रह से ऋण होना मेरे लिए असंभव है।

श्रध्देय प्रा.तिवलेजी, प्रा.वेदपाठकजी, प्रा.कु.रजनी भागवताजी की मैं ऋणी हूँ, जिन्होंने एम.फिल.की उपाधि के लिए मेरा हौसला बढाया। उनके प्रति आभार प्रकट करना मैं अपना दायित्व समझती हूँ। इसके साथ ही शिवाजी विश्वविद्यालय के ग्रंथपाल का सहयोग मैं कभी भूल नहीं सकती। इस ग्रंथालय के ग्रंथपाल एवं संबंधित सभी कर्मचारियों की तथा पी.जी.विभाग के सभी कर्मचारियों की मैं आभारी हूँ। मेरे पूज्य माता-पिताजी एवं परिवार की प्रेरणा के साथ हार्दिक सहयोग मिला जिसके कारण मैं यह लघु शोध-प्रबन्ध पूर्ण करने में सफल हुयी। अत: उनके प्रति सविनय कृतज्ञता प्रकट करती हूँ। मेरे स्कूल के हेड-मास्टरजी, अध्यापक, वर्ग और कर्मचारियों का भी सहयोग मिला, उनको भी मैं ऋणी हूँ। अंत में उन सब के प्रति मैं अपना आभार प्रकट करती हूँ, जिनका कार्य को सम्पन्न करने में प्रत्यक्ष एवं परोक्ष सहयोग प्राप्त हुआ। मैं टंकलेखनिक श्री बाळकृष्ण रा.सावंत, कोल्हापुर उनकी भी आभारी हूँ।

कोल्हापुर।   शोध-छात्रा Gavale

दिनांक : : :१९९३।   (कु.शशिकला शामराव इंगवले.)